मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध तथा प्रकाशन की भूमिका

श्री धनपाल राज हीरामन

प्रस्तावना

साहित्य और शोध ! तभी संभव है, जब प्रकाशन हो ! प्रकाश की व्यवस्था हो! मुद्रण मशीन हो! 1834-1920 तक भारतीय गिरमिटिया मज़दूर भारत से मॉरीशस आए या लाए गए। उन्हीं के साथ भोजपूरी व हिंदी यहाँ पहुँची थी। क्योंकि भारतीय मज़दूरों की अधिकतर संख्या बिहार से थी, मध्य प्रदेश से थी ! वे कुछ लिखित व हस्त लिखित धर्म ग्रंथ अपने साथ ले आए थे। पर अधिक साहित्य यानी लोक कथाएँ और लोक गीत, बोल-चाल तथा बोली-बतियाने तक ही सीमित थी। साहित्य लेखन तब तक इस देश में आरंभ नहीं हुआ था जब तक प्रकाशन नहीं हुआ और मुद्रण की मशीन यहाँ नहीं पहुँची !

भारतीय मज़दूर पेट पर यहाँ सवेरे 5.00 से शाम 6.00 बजे तक खेतों में बैलों की तरह जोते जाते थे, भला उन्हें कहाँ फुर्सत थी इन सब बातों के लिए। बूट और कोड़े के दर्द को बयाँ करने के लिए आवाज़ थी पर शब्द कहाँ थे ? राशन पर खाना, तेल, घासलेट पाने वालों के यहाँ पैसे कहाँ थे ? जो मुद्रण मशेनें मँगवाते, अखबार-पत्रिका छापते और लोगों तक पहुँचाने की आज़ादी भी तो नहीं थी। भारतीय मज़दूर अपने वतन भारत नहीं लौट पाए थे क्योंकि उन के यहाँ पैसा नहीं था। क्योंकि शर्त के मुताबिक गोरे उन्हें भारत लौटा न पाए थे। वे ठगे गए थे। वे यहीं बस गए थे। कहीं गंगा बना दी तो गाँव-गाँव में मंदिर, मस्जिद, कोविल खड़े कर दिए।

1901 में इत्तेफ़ाक ही सही, मोहनदास करमचंद गाँधी यहाँ आए थे। क्योंकि दक्षिण अफ़्रीका से भारत लौटते समय उनका जहाज़ 'नौशेरा' खराब हो गया था। मरम्मत के लिए 19-20 दिनों तक पोर्ट लुई बंदरगाह में लंगर डाले रहा। दक्षिण अफ़्रीका में रह रहे गाँधी को मॉरीशस के भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों की खराब स्थिति का पता था। वे जानकारी लेते रहते थे और गुजरात में छप रहे 'ट्रिब्यून' अखबार में इस की चर्चा करते रहते थे। अपने मॉरीशस ठहराव के दौरान उन्होंने अपना समय ज़ाया नहीं किया था। घूम-घूमकर स्थिति का जायज़ा लिया था और जाने से पहले यहाँ के भारतीय मूल के लोगों को दो सलाहें दीं –

1. अपने बच्चों को शिक्षित कीजिए
2. उन्हें राजनीति में आने के लिए प्रेरित कीजिए।

1901 नवंबर के गए करमचंद गाँधी ने इंग्लैंड से शिक्षित बड़ौडा के युवा बैरिस्टर मगनलाल मणिलाल डॉक्टर को यहाँ भेजा। मणिलाल इंगलैंड में ही गाँधी जी से मिले थे। भारत लौटते समय वे फ्रांस भी हो आए थे जहाँ उन्होंने फ्रांसीसी भाषा सीखी, क्योंकि मॉरीशस के औपनिवेशिक ज़्यादातर फ्रेंच गोरे थे और उन्हीं से टक्कर लेना था। वे 1907 में यहाँ, मॉरीशस पहुँचे। उनका मिशन था मॉरीशस में रह

रहे भारतीय मज़दूरों की दयनीय स्थिति को सुधारने में मदद करना। यहाँ के मज़दूरों के पक्ष में लड़ना, संघर्ष करना, पैरवी करना आदि।

भारतीय मज़दूरों को एक करने के लिए उन्होंने 1909 में भारत से मुद्रण मशीन मंगवाई और 'हिंदुस्तानी' अखबार निकालना शुरू किया। वह छपता गुजराती-अंग्रेज़ी में था पर बाद में हिंदी-अंग्रेज़ी में छपने लगा था।

'हिंदुस्तानी' ही वह पत्र था जहाँ हिंदी का पहला छपा रूप इस बंजर ज़मीन पर देखने को मिला। इस देश का पहला हिंदी साहित्य भी 'होली' कविता का प्रकाशन होता है। इस तरह से मणिलाल इस देश में हिंदी मुद्रण, प्रकाशन और हिंदी पत्रकारिता के जनक हो जाते हैं।

कविता

मॉरीशस की भूमि पर जो पहली कविता प्राप्त है, वह 'होली' है जो 'हिंदुस्तानी' अखबार में 1913 को छपी थी। इस के लग-भग दस वर्षों के बाद 1923 में मॉरीशस की धरती की कविता पहली प्राप्त व छपती है – 'रसपुंज कुंडलियाँ'। इसके रचयता पं. लक्ष्मीरनारायण चतुर्वेदी'रसपुंज' थे। यद्यपि यहाँ पुरानी और सीमित छापने वाली मुद्रण मशीन थी तथापि कवि ने स्वयं भारत से यह प्राप्त व प्रकाशित करवाई थी। इस बीच हिंदी अखबारों या मासिक पत्रिकाओं में हिंदी कविता का प्रकाशन तो हुआ है पर पहला काव्य-संग्रह रसपुंज का ही माना जाएगा। कुछ इतिहासकारों को यह अस्वीकार्य है। उनका कथन है " क्योंकि लेखक भारतीय और प्रकाशन भारत तो फिर यह मॉरीशन कैसे हुआ?"

इस के पूरे दस वर्ष बाद 1934 में मॉरीशस का दूसरा और तीसरा काव्य संग्रह है – 'कृष्ण की वेदी' और 'वंशी की तान'। 1935 में 'रसपंज कुंडलियाँ' के रचयिता का दूसरा काव्य संग्रह छपता है – 'शताब्दी सरोज'।

मौलिक और मॉरीशसीय तथा मॉरीशसीय पृष्ठभूमि की कविताएँ 1940 के बाद लिखी और प्रकाशित होने लगी। इसमें हिंदी प्रचारिणी सभा का भारी योगदान था। 1935, 1936 और 1937 में सभा ने हस्त लिखित पत्रिका 'दुर्गा' निकाली। हाथ से लिखते और हाथों-हाथ वितरित करते। इसी में लिखते-पढ़ते, देखा-सुनी में कवि सामने आए। 'दुर्गा' के आवरण पृष्ठ बनाने वाले मधुकर भगत कवि के रूप में आने लगे। 1948 में पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित किया – मधुपर्क। 1949 में दो संग्रह तथा 1953 में भी दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। वे 5-6 दशकों तक हमारे कविता-संग्रहों में छपते रहे और कुल मिलाकर 50 संग्रह निकाले।

1953 आते-आते मॉरीशसीय कविता में स्वतंत्रता का बिगुल साफ सुनाई देने लगा था। लेखन ने ज़ोड़ पकड़ा – कवि और कविता धड़ाधड़ सामने आए। 1953 से 1973 के बीच 50 से भी कुछ अधिक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो जाते हैं। 1973-1993 तक लग-भग इतने ही काव्य-संग्रह छपे। 1993-2013 तक काव्य संग्रहों के प्रकाशन की यह संख्या जारी रही और बढ़ी भी।

2013 से अब तक हर साल तकरीबन 8-10 हिंदी प्रकाशन मॉरीशस में छपते आ रहे हैं। उनमें अधिकतर काव्य संग्रह हैं। काव्य संग्रहों के प्रकाशन में हर वर्ष ही वृद्धि नोट की गई है। अच्छी और स्तरीय कविताएँ भारत की पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी हैं तथा स्थानीय पाठ्य-पुस्तकों में भी शामिल हो चुकी हैं।

मॉरीशस के प्रमुख कवि : अभिमन्यु अतन, ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर', सोमदत्त बखोरी, हरीनारायण सीता, ठाकुरदत्त पाण्डेय, मुनिश्वरलाल चिंतामणि, बीरसेन जागासिंह, पूजानन्द नेमा, हेमराज सुन्दर, धनराज शम्भु, राज हीरामन, सुमति सन्धु, सूर्यप्रसाद मंगर भगत, जनार्धन कालिचरण, ज्ञानेश्वर रघुवीर, देवननन हेमराज, रीधि रूपचंद, रेशमी कुमारी रागपत, परमेश्वर बिहारी, जगलाल रामा, बृजलाल रामदीन, महेश रामजीयावन, जयदत्त जीऊत, श्रीमती कल्पना लालजी आदि।

कहानी विधा

कहानी, इस विधा पर काम अधिक हुआ है पर कविता-प्रकाशन के काफी बाद ! 1968 में ईश्वरचंद्र गंगाराम का 'एक सपना' कहानी संग्रह छपता है। उसी साल ईश्वरदत्त अलीमन 'नई कहानियाँ' कहानी-संग्रह का संपादन करते हैं।

1974 में अभिमन्यु अनत का पहला काव्य-संग्रह सामने आता है। इसे प्रकाशित किया, बो-बासें (मॉरीशस) के त्रिवेणी क्लब ने। 1967 से लेकर 2014 तक 60 कहानी-संग्रह यहाँ प्रकाशित हो चुके हैं। पिछला कहानी-संग्रह है राज हीरामन का' बर्फ़ सी गर्मी।

मॉरीशस के प्रमुख कहानीकार हैं: अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, पूजानंद नेमा, भानुमति नागदान, धनराज शंभु, जय जीऊत, महेश रामजियावन, डॉ. हेमराज सुन्दर, मोहनलाल बृजमोहन, इन्द्रदेव भोला, यंतुदेव बेधु, आजामिल माताबदल, लोचन बिदेसी, दानिश्वर शाम, पं. बेणीमाधो रामखेलावन, राज हीरामन आदि।

उपन्यास

'पहला कदम' इस देश का पहला उपन्यास माना जाता है जो 1960 में छपा और लिखने वाले श्री कृष्ण लाल बिहारी हैं। उनके ठीक दस वर्ष बाद मॉरीशस के कथाकार तथा उपन्यास सम्राट अभिमन्यु

अनत का पहला उपन्यास छपता है – 'और नदी बहती रही'। 1970 से वे अब तक लिखते आ रहे हैं। उनके 50 से भी अधिक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। 'लाल पसीना' उनका कालजयी उपन्यास है।

प्रमुख उपन्यासकारों के नाम इस तरह हैं: अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, पं. बेणीमाधो रामखेलावन, दानिश्वर शाम, प्रसाद गणपत, देव रंजीत, हीरालाल लीलाधर, आनंद देबी, दीपचंद बिहारी, गोवर्धन ठाकुर आदि।

रामदेव धुरंधर ने 6 खंडों, 3000 पृष्ठों और 500 पात्रों वाला 'पत्थरीला सोना' लिखकर संसार के सब से लम्बे (बड़े) उपन्यास लिखने का कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। यह मॉरीशसीय साहित्य की उपलब्धि ही मानी जाएगी। रामदेव के अब तक दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

लघुकथा

मॉरीशस में लघुकथाएँ कम लिखी और प्रकाशित हुईं। रामदेव धुरंधर ने 6 लघुकथा-संग्रहों में 3000 स्तरीय लघुकथाएँ प्रकाशित करवाईं। इतनी लघुकथाएँ तो शायद भारत में भी किसी ने प्रकाशित नहीं करवाई होंगी। रामदेव के साथ-साथ हिंदी लेखक संघ, अभिमन्यु अनत, राज हीरामन, जय जीऊत, बीरसेन जागासिंह आदि के लघुकथा-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। स्थानीय पत्रिकाओं में लघुकथाएँ काफी छपी हैं। डॉ. मुनिश्वरलाल चिंतामणि, डॉ. सुन्दर आदि के नाम आ पाते हैं।

नाटक-एकांकी

देश के प्रथम नाटककार जयनारायण रॉय है। 1941 में उनका 'जीवन संगिनी' छपा था। नाट्क-एकांकी की 40 के लग-भग पुस्तकें प्रकाशित हैं। पिछले महीने गौकरण सितोहल का 'ममता' एकांकी-संग्रह दिल्ली के स्टार पब्लिकेशन से छपकर आया है। स्व. गौकरण ने सैंकड़ों एकांकी कई भाषाओं में लिखीं और मंचित भी किया। उनकी 75 एकांकियाँ अप्रकाशित हैं। रामदेव धुरंधर ने 300 रेडियो नाटक लिखे और प्रस्तुत किए। इसी तरह हर वर्ष कला एवं संस्कृति मंत्रालय हिंदी और भोजपुरी में एकांकी/नाटक प्रतियोगिता का आयोजन करता है जिसमें देश के कोने-कोने से, कॉलेजों से सैंकड़ों नाटक मंचित होते हैं पर ये प्रकाशित नहीं होते हैं।

नाटक इस देश में पुरनियों ने मंचित करना शुरू किया था। 'रामलीला' और धर्म ग्रंथों की कथाओं पर आधारित नाटक! पर अभिमन्यु अनत ने महात्मा गाँधी संस्थान में रहकर अनेक नाटक (लम्बे) लिखे और मंचित किए जिनमें प्रमुख हैं - 'गूंगा इतिहास', 'मरीशा गवाही देना', 'भरत सम भाई', 'रोक लो कान्हा', 'रवि गान'। ये नाटक प्रकाशित भी हुए हैं।

प्रमुख नाटककार : जयनायारण रॉय, अभिमन्यु अतन, रामदेव धुरंधर, महेश रामजियावन, अस्तानंद सदासिंह, धनराज शंभु, राजेन्द्र सदासिंह, छत्रदत्त हीरामन, धन्नारायण जीऊत, गौकरण सितोहल आदि।

व्यंग्य

व्यंग्य में सिर्फ दो ही नाम आते हैं – अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर। रामदेव की चार प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ हैं। 'कलजुगी धरम-करम', 'बंदे आगे भी देख', 'पापी स्वर्ग' और 'चेहरों के झमेले'।

यात्रा संस्मरण

सिर्फ तीन रचनाएँ हैं। सोमदत्त बखोरी व अभिमन्यु अनत की।

संस्मरण

लग-भग 10 संस्मरण प्रकाशित हैं।

बाल साहित्य

'मून्नी लौट आई' – ए.पी. मंगरू, 'बस चली गई' – यंतुदेव बुधु, 'खिलती कलियाँ' – बृजलाल रामदीन, 'मॉरीशस की 15 बाल कहानियाँ' – बीरसेन जागासिंह, 'लालिमा' – केशवदत्त चिंतामणि। पत्रिकाओं में बहुत सारी बाल कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित हैं।

निबंध

अब तक 12-15 निबंध-संग्रह प्रकाशित बताए जाते हैं। इनमें मुनिश्वरलाल चिंतामणि तथा प्रह्लाद रामशरण की तीन-तीन रचनाएँ हैं। राजनीतिक या किन्हीं और कारणों से पं. बासुदेव विष्णुदयाल का नाम जानबूझकर दरकिनार किया गया है वरना उनकी छोटी-मोटी 300 से अधिक रचनाएँ हैं। पं. वासुदेव ही इस देश के सब से अधिक निबंध लिखने व प्रकाशित कराने वाले निबंधकार हैं। वे ही हिंदी के विकास के जनक हैं।

इतिहास

मॉरीशस में इतिहास की लग-भग 30 पुस्तकें प्रकाशित हैं। जिनमें अधिकतर प्रह्लाद रामशरण की हैं। पं. वासुदेव विष्णुदयाल, जयनारायण रॉय, मुनिन्द्रनाथ वर्मा, मोहनलाल मोहित, अनिरूद्ध द्वारका, भरत कौड़िया आदि के नाम भी आ जाते हैं।

हिंदी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य के इतिहास में डॉ. मुनिश्वरलाल चिंतामणि ने तन्मयता से खोज और शोध कार्य किया। उन्होंने खोज कार्यों के पश्चात ही अपनी तीनों रचनाएँ प्रकाशित करवाईं। साहित्य का इतिहास की 7-8 रचनाएँ अब तक गिनाई जा सकती है।

उपसंहार

मॉरीशसीय रचनाकारों की रचनाएँ सिर्फ स्थानीय पाठ्यक्रमों में सामिल नहीं की गई हैं परंतु यह विदेशी शिक्षा में भी योगदान पहुँचा रही हैं। इस लेख में आए सभी विधाओं के साहित्यकारों की रचनाओं पर मॉरीशस विश्व विद्यालय के हज़ारों स्नातक लघु शोध लिख चुके हैं और इस दिशा में अनुसंधान जारी है। पीएचडी और एमफिल की छात्र-छात्राएँ भी स्थानीय रचनाकारों पर अपना शोधप्रबंध संपन्न कर रहे हैं। अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर तो भारतीय विश्व विद्यालयों के स्नातकों के लिए चहेते शोध-विषय बन गए हैं।

वरिष्ठ सहायक संपादक, वसंत/रिमझिम,
सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग,
महात्मा गाँधी संस्थान, मॉरीशस
rajheeramun@gmail.com